

UP Board Notes for Class 12 English Poetry Short Stories Chapter 3 The Lost Child

STORY at a Glance

On a spring festival a little boy went to see the fair with his parents. There he requested them to buy a toy. But his father very politely refused him. Then he saw a sweet meat seller, a flower seller, a man selling balloons of different colours, a juggler playing on a flute to a snake and so on. The child wanted to have these things. But he knew well that his parents would not buy him anything. Then he came to a roundabout which was in full swing. Men, women and children were enjoying it and looked very happy. Now he was overpowered by his desire and boldly requested them, "I want to go on the roundabout, please, father, mother." But there was no reply. He turned to look at his parents but they were not there. He had lost his parents. He shouted loudly. He ran to and fro. He saw a thick crowd of people outside a temple. He ran through their legs, searched his parents but found no sign of them.

A man in the crowd heard his groan and lifted him in his arms. The man asked him many questions about his parents. But he went on weeping and cried only, "I want my mother, I want my father." The man took him to the juggler, balloon seller, flower seller, sweet seller, etc. But he did not see towards them at all. He wanted only his parents. Now everything was useless for him.

कहानी पर एक दृष्टि

वसन्त ऋतु के त्योहार पर एक छोटा लड़का अपने माता-पिता के साथ मेला देखने गया। वहाँ उसने उनसे एक खिलौना खरीदने के लिए प्रार्थना की। किन्तु उसके पिता ने बड़ी विनम्रता से उसे मना कर दिया। फिर उसने एक मिठाई वाले को, फूल बेचने वाले को, भिन्न-भिन्न रंग के गुब्बारे बेचने वाले को, फिर एक साँप के सामने बाँसुरी बजाते हुए मदारी आदि को देखा। बच्चा इन सभी वस्तुओं को लेना चाहता था। किन्तु वह भली प्रकार जानता था कि उसके माता-पिता उसके लिए कोई वस्तु नहीं खरीदेंगे। फिर वह एक झूले के निकट आया जो पूरे जोर पर था। पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे इसका आनन्द ले रहे थे और प्रसन्न दिखायी पड़ते थे। अतः अब वह अपनी इच्छा के वशीभूत हो गया और बहादुरी से उनसे प्रार्थना की, मैं झूले पर बैठना चाहता हूँ, कृपया मम्मी-पापा। किन्तु उसे कोई उत्तर नहीं मिला। वह अपने माता-पिता को देखने के लिए मुड़ा, किन्तु वे वहाँ नहीं थे। उसके माता-पिता खो गए थे। वह जोर-जोर से चीखा। वह इधर-उधर दौड़ा। उसने एक मन्दिर के बाहर लोगों की बहुत भारी भीड़ देखी। वह उनकी टाँगों के बीच में से निकलकर दौड़ा। अपने माता-पिता की तलाश की किन्तु उनका कोई नामोनिशान भी नहीं था।

भीड़ में से एक आदमी ने उसकी रोने की आवाज सुनी और उसे अपनी गोद में उठा लिया। उस व्यक्ति ने उससे उसके माता-पिता के विषय में अनेक प्रश्न पूछे। किन्तु वह फूट-फूटकर रोता रहा और चीखता रहा, मुझे मेरी माँ चाहिए, मुझे मेरे पिता चाहिए। वह आदमी उसे झूले पर ले गया। मदारी के पास ले गया। गुब्बारा बेचने वाले के

पास, फूल बेचने वाले के पास और मिठाई बेचने वाले के पास ले गया। किन्तु हर बार उसने उनकी ओर देखा भी नहीं। उसे केवल अपने माता-पिता चाहिए थे। अब उसके लिए प्रत्येक वस्तु बेकार थी।